अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि समुद्र के गुस्से का क्या कारण था? उसने अपना गुस्सा कैसे व्यक्त किया?

Answer:

समुद्र के गुस्से का कारण था– उसके क्षेत्र में मानव का निरंतर अतिक्रमण करते जाना। महानगरीकरण के कारण बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। जिस कारण समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। समुद्र ने टाँगों को सिकोड़कर, उकड़ू बैठकर, खड़े होकर ज़मीन दी, परंतु जब अति हो गई तो समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लहरों पर चल रहे तीन जहाज़ों को गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र किनारे जा गिरा, दूसरा बाँद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर जा गिरा। ये तीनों जहाज़ इस प्रकार नष्ट हुए कि दुबारा चलने योग्य नहीं रहे और पर्यटकों के लिए मनोरंजक एवं दर्शनीय वस्तु बन गए।

Question 2.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के अनुसार वनस्पति और जीव-जगत के बारे में लेखक की माँ के क्या विचार थे?

Answer:

लेखक 'निदा फ़ाज़ली' बताते हैं कि उनकी माँ अत्यधिक भावुक थीं। वनस्पति और जीव-जगत के बारे में वे अत्यंत संवेदनशील थीं। वे कहती थीं कि सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते-नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर पेड़ रोते हैं। संध्या-वंदना के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए, वे बद्दुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम करो ऐसा करने पर दरिया प्रसन्न होता है। कबूतर हज़रत मुहम्मद को अज़ीज़ हैं, उन्होंने उन्हें अपनी मज़ार के नीले गुंबद पर घोंसले बनाने की इजाज़त दे रखी है अतः उन्हें सताना नहीं चाहिए। मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह तो मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 3.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या कुप्रभाव बताया गया है? अपने शब्दों में विस्तार से लिखिए।

Answer:

बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जब-जब जगह की कमी हुई तब-तब जंगलों को काटा गया। समुद्र तट पर बड़ी-बड़ी बस्तियों को बनाया गया। प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन के दुष्परिणाम सामने आए। इसके परिणामस्वरूप प्रकृति असंतुलित होती चली गई। मौसम चक्र गड़बड़ा गया। गरमी में अत्यधिक गरमी पड़ने लगी। बेवक़्त वर्षा होने लगी, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया। नित नए रोग बढ़ गए। वस्तुतः ये सभी बढ़ती हुई आबादी के ही दुष्परिणाम हैं।

Question 4.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि प्रकृति में असंतुलन क्यों हो रहा है? इसके मुख्य परिणाम क्या हैं?

Answer:

आज प्रकृति में बढ़ते असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव ने बस्तियाँ बसा दी हैं। आस-पास के जंगल काट डाले गए, पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया, पशु-पक्षियों के आशियाने छीन लिए गए, बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया है। जिससे बेवक्त बरसाते होने लगी हैं भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया है, प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया है, नित नए रोग बढ़ गए हैं। प्रकृति में आए इस असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम-चक्र अव्यवस्थित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़ल-ज़ले, सैलाव, तूफ़ान प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। अतः समय रहते इस दिशा में सजग होने की आवश्यकता है।

Question 5.

पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुख से दुखी होने वाले लोग अब कम मिलते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

पाठ 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' में लेखक निदा फ़ाज़ली ने स्पष्ट किया है कि समय के साथ-साथ लोगों की सोच व व्यवहार में भी भारी बदलाव आ गया है। पहले मनुष्य जीव-जंतुओं और प्रकृति के प्रति इतना संवेदनशील था कि उसके दुख से दुखी हो उठता था। लेखक ने सुलेमान का उदाहरण देकर बताया है कि किस प्रकार चींटियों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने लश्कर से भयभीत न होने की बात कही। सुलेमान का यह कथन कि वह तो सभी के लिए मुहब्बत हैं, उनके हृदय की उदारता को ही दिखाता है। इसी प्रकार लेखक ने शेख अयाज़ के पिता द्वारा एक च्योंटे को उसके घर वापस छोड़कर आने में भी जीव-जंतुओं के प्रति संवेदना को ही दिखाया है। नूह नाम के पैगंबर द्वारा अनजाने में एक कुत्ते के दिल को ठेस पहुँचाने के लिए उम्र भर रोते रहने में भी यही भाव झलकता है। लेखक की माँ द्वारा संध्या समय पेड़-पौधों को न छूना, दरिया पर जाकर उसे प्रणाम करना, मुर्गे और कबूतर जैसे जीवों को न सताने की बात कहना, प्रकृति और जीव-जंतुओं से प्रति उनके असीम स्नेह को ही दर्शाता है। परंतु अब प्रकृति के प्रति इतनी संवेदना रखने वाले लोग नज़र नहीं आते तभी तो प्रकृति मनुष्य के हाथों का खिलौना बन गई है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ के कारण न केवल जंगलों को बेदर्दी से काटा है वरन नदियों, नालों और समुद्रों तक की भूमि पर अतिक्रमण कर लिया है। न जाने कितने ही चरिंदों-परिंदों को बेघर कर दिया है। लेखक की पत्नी द्वारा कबूतरों के आशियाने की जगह जाली लगा देना दर्शाता है कि अब लोगों में पहले-सी भावुकता, संवेदनशीलता और सहृदयता नहीं रह गई है जिसके कारण लोग दूसरे के दुख से दुखी होते थे। आजकल पहले सी भावुकता तो कम ही लोगों में देखने को मिलती है।

Question 6.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर प्रकृति के साथ मानव के दुर्व्यवहार और उसके परिणामों पर चर्चा कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

मनुष्य की स्वार्थ भावना के चलते आज प्रकृति मनुष्य के हाथों का खिलौना बन गई है और एक शरारती बच्चे की तरह वह उसे तोड़ने को अमादा है। बढ़ती जनसंख्या की ज़रूरतों को पूरा करने के नाम पर मनुष्य ने नदी, नालों, वनों और समुद्र के क्षेत्रों पर अतिक्रमण कर लिया है। बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरु कर दी हैं। जंगलों को बेदर्दी से काटकर न जाने कितने ही चरिंदों-परिंदों को बेघर कर दिया है। अब आश्रय की तलाश में ये जीव-जंतु बस्तियों में डेरा डालने को विवश है। कितने ही जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ इस अतिक्रमण के चलते विलुप्त हो गई हैं और कितनी ही विलुप्त होने की कगार पर हैं। आए दिन हिंसक जीवों का मनुष्यों की बस्तियों पर आक्रमण करना, मुनष्य की स्वयं की स्वार्थ लोलुपता का कड़वा सच है। प्रकृति के साथ इस खिलवाड़ के चलते मौसम चक्र भी पूरी तरह से गड़-बड़ा गया है। गरमी में अत्यधिक गरमी पड़ना, बेवक़्त वर्षा होना, भूकंप, बाढ़ आदि का ख़तरा बढ़ना मानव द्वारा प्रकृति के साथ किए गए दुर्व्यवहार का ही परिणाम है। जो उसकी जाति पर ही भारी पड़ रहा है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 7.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

(क) 'मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दीं'– कथन का क्या आशय है?

(ख) परिवार के टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से दूर होने के क्या कारण हैं?

(ग) आशय समझाइए– धरती किसी एक की नहीं है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, पर्वत, समुद्र आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है, परंतु इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी स्वार्थ-बुद्धि का प्रयोग करके बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। उसने वनों को काटकर और समुद्र को पीछे धकेलकर बड़ी-बड़ी इमारतें बना दीं और न जाने कितने ही परिंदे-चरिंदों को बेघर कर दिया।

(ख) परिवार के टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से दूर होने का मुख्य कारण है– बढ़ती स्वार्थ भावना, पारिवारिक त्याग, एकता और आपसी प्रेमभाव का अभाव होना। पारस्परिक सौहार्द की कमी के चलते एकल परिवारों का समाज में प्रचलन इस कदर चल पड़ा है कि बड़े-बड़े दालानों वाले घरों का स्थान छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों ने लिया है। बहुमंज़िला इमारतों के छोटे-छोटे कमरों में जीवन सिमट कर रह गया है।

(ग) धरती किसी एक की नहीं है। उस पर पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर सभी की बराबर की हिस्सेदारी है। परंतु आज मानव ने स्वार्थ के कारण अपनी बुद्धिबल का प्रयोग करके उस पर अपना एकाधिकार जताना आरंभ कर दिया है। यह उसकी कुंठित सोच को ही दर्शाता है। मनुष्य को अपनी सब कुछ हड़प लेनी की इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना होगा।

2015
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के गुस्से का क्या कारण था? उसने अपना गुस्सा कैसे शांत किया?

Answer:

समुद्र के गुस्से का कारण था– उसके क्षेत्र में मानव का निरंतर अतिक्रमण करते जाना। महानगरीकरण के कारण बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। जिस कारण समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। समुद्र ने टाँगों को सिकोड़कर, उकड़ू बैठकर, खड़े होकर ज़मीन दी, परंतु जब अति हो गई तो समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लहरों पर चल रहे तीन जहाज़ों को गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र किनारे जा गिरा, दूसरा बाँद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर जा गिरा। ये तीनों जहाज़ इस प्रकार नष्ट हुए कि दुबारा चलने योग्य नहीं रहे और पर्यटकों के लिए मनोरंजक एवं दर्शनीय वस्तु बन गए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निबंधात्मक प्रश्न

Question 9.

शेख अयाज़ के पिता भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए? इससे उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है? 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

एक बार शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर नहाने गए थे। वे आकर खाना खाने बैठे ही थे कि उन्होंने अपनी बाँह पर एक काला च्योंटा रेंगता देखा। शेख अयाज़ के पिता भावुक हो उठे और अपना खाना छोड़कर च्योंटे को कुएँ पर उसके घर वापस छोड़ने गए। इससे उनकी भावुकता, जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम भावना का पता चलता है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 10.

बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जब-जब जगह की कमी हुई तब-तब जंगलों को काटा गया। समुद्र तट पर बड़ी-बड़ी बस्तियों को बनाया गया। प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन के दुष्परिणाम सामने आए। इसके परिणामस्वरूप प्रकृति असंतुलित होती चली गई। मौसम चक्र गड़बड़ा गया। गरमी में अत्यधिक गरमी पड़ने लगी। बेवक़्त वर्षा होने लगी, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया। नित नए रोग बढ़ गए। वस्तुतः ये सभी बढ़ती हुई आबादी के ही दुष्परिणाम हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 11.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों में सब मिल-जुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है।

(क) किस हिस्सेदारी में मानव ने दीवारें खड़ी कर दी हैं और कैसे?

(ख) पूरा संसार अब कैसा हो गया है और क्यों?

(ग) 'छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों'– कथन का क्या आशय है?

Answer:

(क) धरती किसी एक की नहीं है, पंछी, मानव, पशु, पर्वत, समुद्र आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है, परंतु इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि का प्रयोग करके बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। उसने वनों को काटकर और समुद्र को पीछे धकेलकर वहाँ बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बना दीं और न जानें कितने जीव-जंतुओं, परिंदों-चरिंदों को बेघर कर दिया।

(ख) पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था जो अब टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से अलग हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों में सब मिल-जुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। आज मानव जाति की भूख इस क़दर बढ़ गई है कि उसने अन्य जीवधारियों के हिस्से की ज़मीन पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है। अब तो वह अपनी ही जाति को विनाश के कगार पर खड़ा करने पर तुला है।

(ग) छोटे-छोटे डिब्बों जैसे– घरों का आशय है ऐसे घर जिनमें न दालान है न संयुक्त परिवार की भावना। एकल परिवारों का समाज में प्रचलन इस क़दर चल पड़ा है कि बड़े-बड़े दालानों वाले घरों का स्थान छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों ने ले लिया है। बहुमंज़िला इमारतों के छोटे-छोटे कमरों में जीवन सिमट गया है।

Question 12.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में लेखक ने प्रेम और अपनत्व की भावना के अभाव के क्या कारण बताए हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में लेखक ने प्रेम और अपनत्व की भावना के अभाव के कई कारण बताए हैं, जिसमें मुख्य हैं– समय के साथ-साथ मनुष्य की सोच एवं व्यवहार में बदलाव। पहले मनुष्य संयुक्त परिवारों में बड़े-बड़े घर-आँगनों में रहता था, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में ज़िंदगी सिमट गई है। संयुक्त परिवार के त्याग, प्रेम, सौहार्द जैसे भाव एकल परिवार के तनाव, स्वार्थ, ईर्ष्या, अकेलेपन में बदल गए हैं। बदलते जीवन-मूल्य अपने से अपनों को छीनते जा रहे हैं। दूसरी तरफ़ प्रकृति, जिसे माँ माना जाता है, अब मनुष्य के हाथों का खिलौना बन गई है। पहले मनुष्य के सीने में दिल धड़कता था, वह दूसरों के दुख से दुखी होता था, सभी जीवों के लिए उसके मन में प्यार था, अब उसी मनुष्य ने पशु-पक्षियों का आसरा छीनकर उन्हें बेघर कर दिया है। स्वार्थ से घिरा मनुष्य मशीनों के बीच मशीन बनकर रह गया है।

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 13.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के क्रोध का क्या कारण बताया गया है? उसने अपना क्रोध कैसे शांत किया? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

समुद्र के गुस्से का कारण था– उसके क्षेत्र में मानव का निरंतर अतिक्रमण करते जाना। महानगरीकरण के कारण बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। जिस कारण समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। समुद्र ने टाँगों को सिकोड़कर, उकड़ू बैठकर, खड़े होकर ज़मीन दी, परंतु जब अति हो गई तो समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लहरों पर चल रहे तीन जहाज़ों को गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र किनारे जा गिरा, दूसरा बाँद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर जा गिरा। ये तीनों जहाज़ इस प्रकार नष्ट हुए कि दुबारा चलने योग्य नहीं रहे और पर्यटकों के लिए मनोरंजक एवं दर्शनीय वस्तु बन गए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 14.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है?

Answer:

बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जब-जब जगह की कमी हुई तब-तब जंगलों को काटा गया। समुद्र तट पर बड़ी-बड़ी बस्तियों को बनाया गया। प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन के दुष्परिणाम सामने आए। इसके परिणामस्वरूप प्रकृति असंतुलित होती चली गई। मौसम चक्र गड़बड़ा गया। गरमी में अत्यधिक गरमी पड़ने लगी। बेवक़्त वर्षा होने लगी, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया। नित नए रोग बढ़ गए। वस्तुतः ये सभी बढ़ती हुई आबादी के ही दुष्परिणाम हैं।

Question 15.

प्रकृति में आए असंतुलन के कारण और उसके परिणामों की चर्चा, 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर कीजिए।

Answer:

प्रकृति में आए असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव की बस्तियाँ बसा दी हैं। आसपास के जंगल काट डाले गए। पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया। पशु-पक्षी बस्तियाँ छोड़कर भाग गए। बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया। बेवक़्त बरसातें होने लगीं, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया, नित नए रोग बढ़ गए, प्रकृति में आए असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम अनिश्चित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। समय रहते इस दिशा में सचेत होने की आवश्यकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 16.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही।

(क) माँ के दुख का क्या कारण था और उसका दुख कैसे बढ़ गया?

(ख) माँ के गुनाह और उसके प्रायश्चित पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) माँ ने खुदा से क्या दुआ माँगी?

Answer:

(क) लेखक के घर के रोशनदान में कबूतर ने घोंसला बनाकर उसमें अंडे दिए थे। एक दिन एक बिल्ली ने उनमें से एक अंडा तोड़ दिया। इस घटना से कबूतरों को दुखी देखकर माँ दुखी हो गई, परंतु उनका दुख उस समय और बढ़ गया जब दूसरे अंडे को बचाने के प्रयास में वह उनके हाथों से ही गिरकर टूट गया।

(ख) बिल्ली से कबूतर के दूसरे अंडे को बचाने के प्रयास में लेखक की माँ के हाथों से ही गिरकर अंडा टूट गया। इस घटना से माँ अत्यधिक दुखी हो गई। वे पूरा दिन अल्लाह से अपनी इस गलती की मुआफ़ी माँगती रहीं। प्रायश्चित स्वरूप उन्होंने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर न कुछ-खाया न पिया। सिर्फ़ रोती रहीं।

(ग) लेखक की माँ ने बार-बार नमाज़ पढ़कर खुदा से अपनी गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 17.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है।

(क) धरती किसी एक की नहीं है– ऐसा क्यों कहा गया है?

(ख) धरती की हिस्सेदारी में दीवारें किसने और क्यों खड़ी कर दी हैं?

(ग) पहले की अपेक्षा अब लोगों के रहने का जीवन कैसे सिमटने लगा है?

Answer:

(क) धरती किसी एक की नहीं है। उस पर पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर सभी की बराबर की हिस्सेदारी है। आज मनुष्य ने स्वार्थ के कारण अपनी बुद्धि-बल का प्रयोग करके उस पर अपना एकाधिकार जताना आरंभ कर दिया है। यह उसकी कुंठित सोच को ही दर्शाता है। दूसरों के हिस्से को हड़पने की अपनी इस प्रवृत्ति पर उसे अंकुश लगाना होगा।

(ख) धरती की हिस्सेदारी में मनुष्य ने दीवारें खड़ी कर दी हैं। मनुष्य ने अपने स्वार्थ, लोभ, लालच और सब कुछ हड़पने की प्रवृत्ति के कारण ऐसा किया है।

(ग) पहले लोग बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 18.

प्रकृति में आए असंतुलन से क्या-क्या बदलाव आए हैं? इससे मानव जाति के लिए क्या-क्या ख़तरे पैदा हो गए हैं? 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

आज प्रकृति में बढ़ते असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव ने बस्तियाँ बसा दी हैं। आस-पास के जंगल काट डाले गए, पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया, पशु-पक्षियों के आशियाने छीन लिए गए, बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया है। जिससे बेवक्त बरसाते होने लगी हैं भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया है, प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया है, नित नए रोग बढ़ गए हैं। प्रकृति में आए इस असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम-चक्र अव्यवस्थित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़ल-ज़ले, सैलाव, तूफ़ान प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। अतः समय रहते इस दिशा में सजग होने की आवश्यकता है।

Question 19.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक पाठ के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है? आपके विचार में क्या होना चाहिए? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

इस पाठ के माध्यम से लेखक ने सुलेमान, शेख अयाज़ के पिता, नूह एवं अपनी माँ के धार्मिक, भावुक, संवेदनशील व उदार स्वभाव का उल्लेख करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि पहले लोगों में न केवल मानव जाति, बल्कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि सबके प्रति उदारता का भाव था, जबकि आज लोहे-पत्थरों की बस्ती में रहते हुए मानव खुद पत्थर बन गया है और उसकी संवेदनशीलता ख़त्म होती जा रही है, जो मानवता के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं हैं। अतः यह पाठ संवेदनशील बनने की सीख देता है तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक बनने का भी आह्वान करता है।

Question 20.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का लेखक "मिट्टी से मिट्टी मिले खो के सभी निशान"– उक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

"मिट्टी से मिट्टी मिले खो के सभी निशान"– उक्ति के माध्यम से 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के लेखक मनुष्य को नश्वर शरीर पर घमंड न करने की सीख देना चाहते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य को अपने रंग, रूप आदि पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि अंत में यह शरीर अपनी सभी पहचान खो देता है तथा मिट्टी में मिलकर केवल मिट्टी बन जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 21.

"मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति प्राकृतिक असंतुलन का मुख्य कारण है" 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर प्रस्तुत कथन की समीक्षा कीजिए।

Answer:

'निदा फ़ाज़ली' द्वारा रचित 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के इस कथन में लेखक ने प्रकृति के अंधाधुंध तरीके से किए जा रहे दोहन के लिए मनुष्य को सचेत किया है। उन्होंने मनुष्य को सावधान रहने की सीख देते हुए कहा है कि प्रकृति एक हद तक अपना शोषण सहती है, इसके बाद उसकी सहनशक्ति जवाब दे जाती है और जब ऐसा होता है, तब वह भावनाओं और संवेदनाओं से अलग होकर अपने रौद्र रूप में सामने आ जाती है। इसके लिए लेखक ने बंबई में समुद्र के गुस्से का उदाहरण दिया है कि जब सहनशीलता की हद हो गई तब समुद्र ने गुस्से में भरकर इतना भयावना रूप धारण कर लिया कि बंबई वाले त्राहि-त्राहि कर उठे। इस कथन के द्वारा यही संदेश दिया गया है कि मनुष्य प्रकृति का अनुचित दोहन न करे, वरना प्रकृति द्वारा रौद्र रूप में भरकर किया गया वार उससे झेला नहीं जाएगा।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 22.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

(क) धरती किसी एक की नहीं है लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

(ख) धरती की हिस्सेदारी में दीवारें किसने और कैसे खड़ी कर दीं?

(ग) संसार अब कैसा हो चुका है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) धरती किसी एक की नहीं है, लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि इसमें रहने वाले हर जीव की इसमें समान हिस्सेदारी है अर्थात यह धरती केवल मनुष्य की नहीं है, इसमें मानव के साथ-साथ पंछी, पशु, नदी, पर्वत, समुद्र आदि सभी समान रूप से भागीदार हैं।

(ख) धरती की हिस्सेदारी में मनुष्य ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दीं। उसने पूरी धरती को टुकड़ों में बाँट दिया, जबकि प्रारंभ में पूरा संसार एक परिवार के समान था।

(ग) संसार अब टुकड़ों में बँट चुका है। लोगों में एक-दूसरे के प्रति अपनेपन का भाव समाप्त हो चुका है। संसार के इस तरह बँट जाने के कारण मानव-ही-मानव को हानि पहुँचाने का कार्य कर रहा है।

Question 23.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

वे दिन में कई-बार आते-जाते हैं, और क्यों न आएँ-जाएँ? आखिर उनका भी घर है। लेकिन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है। वे कभी किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देते हैं। कभी मेरी लाइब्रेरी में घुसकर कबीर या मिर्ज़ा गालिब को सताने लगते हैं। इस रोज़-रोज़ की परेशानी से तंग आकर मेरी पत्नी ने उस जगह, जहाँ उनका आशियाना था, एक जाली लगा दी है, उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया है।

(क) कबूतर लेखक के घर में दिन में कई बार क्यों आते-जाते रहते हैं?

(ख) कबूतरों के आने से लेखक को घर में क्या-क्या नुकसान झेलने पड़े?

(ग) परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने क्या उपाय किया?

Answer:

(क) जिस स्थान पर लेखक का फ़्लैट है, उस जगह कभी जंगल थे अर्थात यह स्थान उन निरीह प्राणियों का ही था, किंतु मनुष्य ने जंगलों को काटकर बड़े-बड़े अपार्टमेंट बना लिए, किंतु नैतिक आधार पर देखा जाए तो उस स्थान पर उन जीवों का अधिकार है। लेखक के फ़्लैट में कबूतरों ने एक घोंसला बनाया है, जिसमें उनके बच्चे हैं, वे उन बच्चों के लिए दिन में कई-कई बार दाना लेने के लिए बाहर जाते हैं। अतः अपने बच्चों के कारण उन्हें लेखक के घर में कई-कई बार आना-जाना पड़ता है।

(ख) कबूतर फ़्लैट में आकर कई चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कभी पुस्तकालय में घुसकर किताबें गंदी कर देते थे। कबूतरों के आने-जाने से लेखक को यही सब नुकसान झेलने पड़े। इन्हीं नुकसानों के कारण लेखक व उनकी पत्नी को कबूतरों का आना-जाना अच्छा नहीं लगता था।

(ग) कबूतरों के आने-जाने से होने वाली परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने खिड़की पर जाली लगवा दी तथा कबूतरों के बच्चों को दूसरे स्थान पर रख दिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 24.

बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है? 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जब-जब जगह की कमी हुई तब-तब जंगलों को काटा गया। समुद्र तट पर बड़ी-बड़ी बस्तियों को बनाया गया। प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन के दुष्परिणाम सामने आए। इसके परिणामस्वरूप प्रकृति असंतुलित होती चली गई। मौसम चक्र गड़बड़ा गया। गरमी में अत्यधिक गरमी पड़ने लगी। बेवक़्त वर्षा होने लगी, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया। नित नए रोग बढ़ गए। वस्तुतः ये सभी बढ़ती हुई आबादी के ही दुष्परिणाम हैं।

Question 25.

'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि समुद्र को क्रोध आने का क्या कारण था। उसने अपना गुस्सा कैसे शांत किया?

Answer:

समुद्र के गुस्से का कारण था– उसके क्षेत्र में मानव का निरंतर अतिक्रमण करते जाना। महानगरीकरण के कारण बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। जिस कारण समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। समुद्र ने टाँगों को सिकोड़कर, उकड़ू बैठकर, खड़े होकर ज़मीन दी, परंतु जब अति हो गई तो समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लहरों पर चल रहे तीन जहाज़ों को गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र किनारे जा गिरा, दूसरा बाँद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर जा गिरा। ये तीनों जहाज़ इस प्रकार नष्ट हुए कि दुबारा चलने योग्य नहीं रहे और पर्यटकों के लिए मनोरंजक एवं दर्शनीय वस्तु बन गए।

Question 26.

कबूतरों से लेखक की पत्नी को क्या परेशानी थी? उन्होंने उनसे छुटकारा पाने का क्या उपाय किया? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होन वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कबूतरों से लेखक की पत्नी को बहुत परेशानी होती थी क्योंकि कबूतर रोशनदान से कमरे में कई बार आया-जाया करते थे, और कभी किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देते थे, तो कभी घर में रखी किताबों पर गंदगी फैला जाते थे। इस रोज़-रोज़ की परेशानी से छुटकारा पाने के लिए लेखक की पत्नी ने रोशनदान पर एक जाली लगवा दी थी।

Question 27.

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

Answer:

लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली इसलिए लगवानी पड़ी क्योंकि उस खिड़की से कबूतर घर के अंदर आ जाते थे। कबूतर घर के अंदर एक ही दिन में कई-कई बार आ जाते थे। और वहाँ रखी चीज़ों को तोड़ जाते थे। वे कबूतर वहाँ रखी हुई किताबों को गंदा कर जाते थे। रोज़-रोज़ की इस परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने जाली लगवाकर कबूतरों के घर के आने पर रोक लगाई।

Question 28.

'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रकृति में क्या असंतुलन आए और उनके क्या परिणाम हुए।

Answer:

प्रकृति में आए असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव की बस्तियाँ बसा दी हैं। आसपास के जंगल काट डाले गए। पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया। पशु-पक्षी बस्तियाँ छोड़कर भाग गए। बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया। बेवक़्त बरसातें होने लगीं, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया, नित नए रोग बढ़ गए, प्रकृति में आए असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम अनिश्चित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। समय रहते इस दिशा में सचेत होने की आवश्यकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 29.

"जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।" 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होन वाले' पाठ के आधार पर सोदाहरण आशय कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

यह सत्य ही कहा है कि जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना कम गुस्सा आता है। लेकिन जब आता है, तो उसे रोकना मुश्किल हो जाता है। यहाँ समुद्र के बारे में ऐसा कहा गया है। कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे ढकेल कर उसकी ज़मीन को हथिया रहे हैं। बेचारा समुद्र लगातार सिमटता जा रहा है। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमट कर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी, तो उकड़ूँ बैठ गया। फिर खड़ा हो गया। और जब खड़ा रहने की जगह कम पड़ी, तो समुद्र की सहनशक्ति ने जवाब दे दिया।

समुद्र के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले दक्षिणी भारत के तट पर और मुंबई में देखने को मिला था। यह नमूना इतना डरावना था कि मुंबई निवासी डरकर अपने-अपने पूजा स्थलों में अपने-अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे। इस सुनामी में अनगिनत आदमी मरे थे। समुद्र के गुस्से का उदाहरण देते हुए लेखक ने कहा है कि इसी समुद्र ने मुंबई में एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठाकर बच्चों के गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वरली के समंदर के किनारे पर जा कर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह गिरा और तीसरा गेट वे-ऑफ-इंडिया पर टूट कर सैलानियों का नज़ारा बना। लाख कोशिश के बावजूद भी वे फिर चलने के काबिल नहीं हो सके। लेखक ने इस कथन के द्वारा यह कहने का प्रयास किया है कि हमें प्रकृति को बचाने का प्रयास करना चाहिए।

Question 30.

"मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मुहब्बत हूँ" इस कथन से लेखक क्या संदेश देना चाहता है? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होन वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इस कथन का प्रयोग 'सुलेमान' ने चींटियों को संबोधित करते हुए कहा था कि वे किसी के लिए मुसीबत नहीं हैं, सबके लिए मुहब्बत हैं। सुलेमान एक बादशाह थे। उनके मन में केवल मानव-जाति के लिए ही नहीं, अपितु सभी पशु-पक्षियों के लिए दया की भावना थी और वे उन सबकी भाषा भी समझते थे। एक बार बादशाह सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। उसी रास्ते से कुछ चींटियाँ गुज़र रही थीं। जब उन चींटियों ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनी, तो भयभीत होकर बोलीं कि अब उन्हें घोड़ों के पैरों से बचने के लिए जल्दी से बिल में जाना चाहिए। तभी बादशाह सुलेमान ने उनकी बात सुन ली और चींटियों को आश्वासन दिया कि उनके सैनिकों द्वारा चींटियों को कोई तकलीफ़ नहीं होगी। इस प्रकार यहाँ प्रयुक्त कथन से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें हर प्राणी के दुख-दर्द को सहानुभूतिपूर्वक समझने का प्रयास करना चाहिए। इस कथन का प्रयोग यहाँ इसलिए किया गया है कि समाज में संवेदना व प्रेम का भाव हो। प्रत्येक मनुष्य के मन में मानव-जाति एवं सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, सहिष्णुता, त्याग, सहानुभूति व एकता का भाव जागृत करने के लिए इस कथन का प्रयोग किया गया है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने आधुनिक समाज में व्याप्त घृणा, स्वार्थ, द्वेष, भेद-भाव, असहिष्णुता को दूर करने का महत्त्वपूर्ण संदेश दिया है।

Question 31.

"इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें-से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं, उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल दिया है"। इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए और ऐसा होने का कारण बताइए।

Answer:

"इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें-से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं, उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल दिया है। लेखक कहते हैं कि मुंबई में मानव बस्ती बनाने के लिए मनुष्य ने अनेक पेड़ों को काट दिया, जिससे न जाने कितने घोंसले, पशु-पक्षियों के आश्रय स्थल उजड़ गए। मुंबई में समुद्र के किनारे बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं जिससे पशु-पक्षियों के आवास नष्ट हो चुके हैं। पक्षियों की कई प्रजातियाँ नष्ट हो रही हैं। प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इससे परिंदे मर तो रहे ही हैं कई शहर/स्थान छोड़ कर जा चुके हैं। जो पंक्षी नहीं जा सके उन्होंने इधर-उधर घोंसले बना लिए हैं। कुछ पक्षियों ने लोगों के मकानों में डेरा डाल लिया है। लेखक उपर्युक्त कथन के माध्यम से बताना चाहता है कि मानव ने अपने स्वार्थ के चलते न जाने कितने पशु-पक्षियों के घर उजाड़ दिए हैं। उसने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति से, जंगल, पेड़-पौधे आदि को नष्ट कर दिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 32.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है।

(क) धरती को किस-किसकी बताया गया है?

(ख) हिस्सेदारी में दीवारें किसने खड़ी कर दी हैं और दीवारें खड़ी करने का क्या तात्पर्य है?

(ग) पहले की और आज की जीवन प्रणाली में क्या-क्या अन्तर दिखाई पड़ते हैं?

Answer:

(क) धरती को लेखक ने केवल मनुष्य की न बताकर पशु-पक्षियों, नदी, पर्वत, समुद्र आदि की बताया है अर्थात उसने कहा है कि धरती पर मानव के साथ-साथ पशु-पक्षियों, नदी, पर्वत, समुद्र सबकी समान हिस्सेदारी है।

(ख) हिस्सेदारी में मानवजाति ने बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्य ने अन्य जीवों एवं नदी, पर्वत, समंदर आदि की हिस्सेदारी पर अपना कब्ज़ा शुरू कर दिया है।

(ग) पहले की और आज की जीवन प्रणाली में बहुत अंतर है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 33.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बढ़ती हुई आबादियों ने समुद्र को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है।

(क) बढ़ती हुई आबादी का प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(ख) बारूदी विनाशलीला ने वातावरण को कैसे प्रभावित किया है?

(ग) नए रोगों का जन्म क्यों होने लगा है?

Answer:

(क) बढ़ती हुई आबादी के कारण मनुष्य ने समुद्र को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है। इसके द्वारा फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया है।

(ख) बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नए-नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं।

(ग) बढ़ती आबादी एवं बारूदों की विनाशलीलाओं के कारण मानव और प्रकृति में असंतुलन होने लगा है। नए रोगों का जन्म इसी असंतुलन का परिणाम है।

Question 34.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ग्वालियर में हमारा एक मकान था, उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को ख़ुदा से माफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं, सिर्फ़ रोती रही और बार-बार नमाज़ पढ़-पढ़कर ख़ुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

(क) लेखक की माँ ने रोज़ा क्यों रखा?

(ख) रोज़े के दौरान माँ क्या करती रही? इससे उसकी मनःस्थिति पर क्या प्रकाश डाला गया है?

(ग) अनुच्छेद में निहित संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लेखक की माँ के हाथ से कबूतर का एक अंडा बचाने की कोशिश में गिरकर टूट गया था। इसी गुनाह को ख़ुदा से माफ़ कराने के लिए उसने पूरा दिन रोज़ा रखा।

(ख) रोज़े के दौरान माँ ने दिनभर कुछ खाया-पिया नहीं, सिर्फ़ रोती रहीं और बार-बार नमाज़ पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को माफ़ करने की दुआ माँगती रहीं। वे मन-ही-मन बड़ी दुखी थीं तथा उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

(ग) अनुच्छेद में यह संदेश निहित है कि हमें प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना चाहिए तथा पशु-पक्षियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 35.

समुद्र को गुस्सा क्यों आया? उसने अपना गुस्सा कैसे उतारा? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

समुद्र के गुस्से का कारण था– उसके क्षेत्र में मानव का निरंतर अतिक्रमण करते जाना। महानगरीकरण के कारण बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र के तटीय इलाकों पर कब्ज़ा कर बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। जिस कारण समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। समुद्र ने टाँगों को सिकोड़कर, उकड़ू बैठकर, खड़े होकर ज़मीन दी, परंतु जब अति हो गई तो समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपनी लहरों पर चल रहे तीन जहाज़ों को गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र किनारे जा गिरा, दूसरा बाँद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर जा गिरा। ये तीनों जहाज़ इस प्रकार नष्ट हुए कि दुबारा चलने योग्य नहीं रहे और पर्यटकों के लिए मनोरंजक एवं दर्शनीय वस्तु बन गए।

Question 36.

"इस धरती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है।" 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आलोक में प्रकृति से हो रही छेड़छाड़ पर अपने विचार लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

आबादी बढ़ने के कारण बस्तियों की संख्या बढ़ गई है। बस्तियों के लिए जंगल काटे जा रहे हैं। समुद्र के किनारे बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं, जिससे पशु-पक्षियों के आवास नष्ट हो चुके हैं। पक्षियों की कई प्रजातियाँ नष्ट हो रही हैं। प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इससे परिंदे मर रहे हैं। कुछ पंछी शहर छोड़कर जा चुके हैं। जो पंछी नहीं जा सके उन्होंने इधर-उधर घोंसले बना लिए हैं। कुछ पक्षियों ने लोगों के मकानों में डेरा डाल लिया। परिणामस्वरूप हिमखंड पिघलने लगे हैं। बेवक्त वर्षा, बाढ़, गर्मी, भूकंप, भूस्खलन जैसी घटनाएँ हो रही हैं। अंजान बीमारियों ने मनुष्य पर हमला बोल दिया है। इन्हीं कारणों से आज अनेक रोगों से मानव ग्रस्त हो रहा है।

Question 37.

प्रकृति में आ रहे असंतुलन में बढ़ती आबादी का क्या योगदान है? इसका क्या परिणाम हुआ है? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

Answer:

प्रकृति में आए असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव की बस्तियाँ बसा दी हैं। आसपास के जंगल काट डाले गए। पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया। पशु-पक्षी बस्तियाँ छोड़कर भाग गए। बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया। बेवक़्त बरसातें होने लगीं, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया, नित नए रोग बढ़ गए, प्रकृति में आए असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम अनिश्चित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। समय रहते इस दिशा में सचेत होने की आवश्यकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 38.

"अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले" पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक की माँ ने प्रायश्चित क्यों किया और कैसे किया?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

निदा फ़ाज़ली द्वारा लिखी रचना 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' में उन्होंने बताया कि बढ़ती हुई आबादी के कारण बस्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है। जंगलों को अंधा-धुंध तरीके से काटा जा रहा है। परिंदों-चरिंदों का घर छिन गया है इसलिए पक्षियों ने लोगों के घरों में डेरा डालना शुरू कर दिया है। इसी क्रम में दो कबूतरों ने लेखक के घर में घोंसला बना लिया था। उस घोंसले में कबूतरों ने दो अंडे दिए थे। उन अंडों में से एक अंडे को बिल्ली ने गिराकर फोड़ दिया था। दूसरे अंडे को बिल्ली से बचाने के लिए लेखक की माँ ने जो प्रयास किया, उसमें उनके हाथ से दूसरा अंडा भी गिरकर टूट गया। वस्तुतः दूसरे अंडे को बिल्ली की पहुँच से दूर करने के लिए वह स्टूल पर चढ़कर उसे सुरक्षित रखने लगी। तभी वह हाथ से छूट गया था। लेखक की माँ को इस बात से बहुत दुख हुआ। कबूतर परेशानी में इसलिए फड़फड़ा रहे थे कि उनके दोनों अंडे टूट गए थे। इसके प्रायश्चित में माँ ने पूरे दिन का रोज़ा रखा। दिनभर माँ ने न कुछ खाया न पानी पीया। वह दिनभर खुदा से अपनी गलती की माफ़ी माँगती रहीं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 39.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव-जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

(क) आशय स्पष्ट कीजिए– 'लेकिन धरती किसी एक की नहीं है।'

(ख) 'धरती कैसे वजूद में आई?' पृथ्वी के निर्माण के बारे में किसी एक वैज्ञानिक तर्क या धार्मिक विश्वास का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

(ग) पहले जैसा संसार अब क्यों नहीं रहा?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'लेकिन धरती किसी एक की नहीं है।' का आशय है कि धरती सभी की है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि। सभी की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है।

(ख) 'धरती कैसे वजूद में आई?' पृथ्वी के निर्माण के बारे में धर्म और विज्ञान अपने-अपने तर्क देते हैं। इसपर समाज में प्रचलित विज्ञान पर आधारित तथ्य यह है कि करोड़ों वर्ष पहले विशाल आकाशीय पिंड में एक भयंकर विस्फोट हुआ था, जिससे एक हिस्से से हमारी पृथ्वी का जन्म हुआ। धीरे-धीरे यह हिस्सा ठंडा हुआ और इसपर जीवन के अनुकूल दशा बननी आरंभ हुई।

(ग) पहले जैसा संसार अब नहीं रहा क्योंकि मानव जाति ने अपने स्वार्थ और अपनी आवश्यकता के अनुसार प्रकृति को कई प्रकार से नुकसान पहुँचाया है। अपनी बुद्धि से अन्य प्राणियों की हिस्सेदारी तथा अपनी हिस्सेदारी के बीच बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं अर्थात् वह अन्य प्राणियों व वस्तुओं के स्थानों पर भी कब्ज़ा जमाने लगा है।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 40.

प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ? 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

प्रकृति में आए असंतुलन का मुख्य कारण है– बढ़ती जनसंख्या। जिसने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। समुद्र की लहरों को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों पर मानव की बस्तियाँ बसा दी हैं। आसपास के जंगल काट डाले गए। पेड़ों को रास्तों से हटा दिया गया। पशु-पक्षी बस्तियाँ छोड़कर भाग गए। बढ़ती गरमी से मौसम चक्र गड़बड़ा गया। बेवक़्त बरसातें होने लगीं, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया, नित नए रोग बढ़ गए, प्रकृति में आए असंतुलन का ही यह दुष्परिणाम है कि मौसम अनिश्चित हो गया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी पड़ने लगी है, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, प्रकृति के इसी असंतुलन का परिणाम हैं। बारूदों की विनाश लीलाओं ने इस स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। समय रहते इस दिशा में सचेत होने की आवश्यकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in